वै·रा·
१२४

124

भव भक्तकर्म आचार ।२७। करुनाकर जलनिधि ते
प्रगटे सुधा कलस लै हाथ ॥ आयुवेद विस्तारनका
रण सकल ब्रह्मंडके नाथ ।२८। तजी उदधि वढे जो भव
पर लियो कूर्म अवतार ॥ परशुराम ह्वै कै द्विज थापे
दूर कियो भवभार ।२९। रघुकुल वंश वनार चुगम
नि पुरुषोत्तम अवतार ॥ दशरथके घर जन्म लि

यो हरि रूपरास सुकुमार ४० रावण कुंभकरन प्रब
राधिप बढे सकल जग मांहे ॥ सबहिन लोकपाल
उन जीते कोऊ बांच्यो नांहे ४१ सकल देव मिल जा
य पुकारे बनरानन के पास ॥ लै शिव संग चले ब
नरानन छीर सिंधु सुखवास ४२ अस्तुति करि ब
हु भांति जगाये तब जागे निज नाथ ॥ आज्ञा दई

जाय कपिञ्जलमैं प्रगटो सब स्वर माय १५३ तब ब्रह्मा
सबहिन सौं भाष्यो सोई सब स्वर कीन्हों ॥ सातौं दीप
जाय कपिञ्जलकमैं आय जन्म स्वर लीन्हों १५४ अपने मुं
ख आप हरि प्रगटे पुरुषोत्तम निजरूप । नारायण मु
ख भार हर्यो है अति आनंद स्वरूप १५५ वासुदेव यों कह
त वेदमैं हैं श्रवन अवतार ॥ शेष सहस मुख रटत

निरंतर तऊन पावत पार ४६ सहस्र वर्षलो ध्यान
कियो शिव राम चरित्र स्ववेसार । अव गाहन करि
कै सब देख्यो तऊन पायो पार ४७ विनी समाधि
सकी नव सक्यो कहो परम गुरुईश ॥ जाको ध्यान
करत उर अंतर को स्वराज जगदीस ४८ नव शिवक
लो राम अकगोविंद परम स्वरूपकमेरे । सहस्र वर्ष

वै·रा·
१२६
126

लौं ध्यान करत हौं रामकृष्ण सावेकेरे ॥ १४९ तामे
राम समाधि करी अब सहस वर्षलो वाम ॥ अति
आनंद मगन मेरो मन अंग अंग हरन काम १५०
दाया करि मोको यह कहिये अमर होइ जेहि भांति·
मोहि नारद मुनि तत्व बतायो तातें जिय अकुलाति
१५१ तब महादेव कृपा करिकै यह चरित्र कियो विस्ता

र ॥ सो ब्रह्मांड पुराण व्यास मुनि कियो वदन उच्चार
१५२ मुनि वालमीक क्रिपा सातें ऋषि राम मंत्र फल
पायो । उलटो नाम जपत ब्रह्म कीन्हो गुन उपदेश क
रायो १५३ राम चरित वरनन के कारण वालमीक
अवतार । तीनों लोक भये परिपूरण राम चरित वि
स्तार १५४ शत कोटी रामायण कीनो नऊन लीनो

पार ॥ कह्यो वशिष्ट मुनि रामचंद्र सो रामायण उच्चा
र १५५ काग भुसुंड गरुड सो भाष्यो रामचरित्र प्रव
नार । सकल वेद अरु शास्त्र कह्यो है रामचंद्र जस
सार १५६ कछु संक्षेप सूर अब बरनत लघुमति दुर
बल बाल । यह रसना पावन के कारन मेंटन भव
जंजाल १५७ तीनो लोक मंगल प्रगटे पुरुषोत्तम श्री

राम । संकरषन प्रद्युम्न लछिमण भरत महाबल
धाम १५८ शत्रुहनहि प्रनवत कहीयत हैं वचन स्वरू
निज रूप । रामचंद्र प्रगटे जब ग्रह मैं हरषे कोसल
भूप १५९ शुभ नक्षत्र नवमी जु परम दिन लगन
सुद्ध शुभ वार । प्रगट भये दशरथ गृह पूरन ब्रह्म
ह अवतार १६० सुनि फूलै दशरथ मनहीं मनकौ

सिल्या सुखपायो । सो सिख कैकइ मनआनंद यह सब
दिन सुतनजायो ९१ गुरु वशिष्ठ नारद मुनि ज्ञानीज
न्मपत्रिका कीनी ॥ रामचंद्र विख्यात नामयह सु
रमुनि की सुधि लीनी ९२ देतदान नृपराज हि
जन को सुरभी हेमअपार । सब सुंदरि मिलि मं
गल गावत कंचन कलश उघार ९३ आये देवसो

र मुनिजन सब दे असीस सुख भारी । अपने अपने था
म चले सब परम मोद अधिकारी ॥ १४ ॥ मन वांछित
फल सबहिन पायो भयो सबन आनंद । बाल रूप कै
के दशरथ सुत करत केल स्वछंद ॥ १५ ॥ घुटुरन चलत
कनक आंगन मैं कौशल्या छबि देखत ॥ नील नलि
न तन पीत झगुलिया घन दामिन दुति पेखत ॥ १६ ॥

वे॰ रा॰
१२९
129

कबहुंक माखन रोटी लैकै खेल करत पुन मांगत ॥ ख
खेलत जननी समुझावत आयकंठ पुनलागत १६७
कागभसुंड दरशको आये पांच वर्षलो देखे । खुसि
करी आपुवर पायो जन्म सुफल करि लेखे १६८ क्रिपा
करि निजधाम पठायो अपनो रूपदिखाय । वाके
आश्रम कोउ बसत है माया लगतन ताय १६९ ॥

प्रातकाल उठ जननि जगावत उठो मेरे बारे राम ॥
उठि बैठे दंत वन लै आई करी ग्वालोरी स्याम ॥७०॥ बा
रो भ्रात मिल करत कलेऊ मधु मेवा पकवान । जल
आचमन आरती करकै फिर कीन्हो असनान ॥७१॥
करत श्रृंगार चार भइया मिल शोभा बरनि न जाई ।
चित्र विचित्र सीस चौतनिया इंद्रधनुक छबि छाई ॥७२॥

अलकावलि मुक्तावलि गुंथी ओर सुरंग विराजै ॥
मनहुं सुरसरी धार सरस्वती यमुना मध्य विराजै १३
तिलक भालपर परम मनोहर गोरोचन को दीनो ॥
मानो तीन लोककी शोभा अधिक उदय सो कीनो
१४ खंजन नैन बीच नासापटु राजत यह अनुहार ॥
खंजन जुग मनो लरत लराई कीर बुझावत रार १५

नाशाके वेसरमै मोती वरन विराजत चार ॥ मनो
जीव शनि शुक्र एक है वाढे रविके द्वार ७९ कुंडल
ललित कपोल विराजत झलकत आभा गंड ॥ इंदी
वर पर मनो देखियत रवि की किरन प्रचंड ८० ॥
अरुणा अधर दमकत दसनावलि चारु चिबुक मुस
क्यान । अति अनुराग सुधाकर सींचत दाडिम बीज

समान २८ कंठ सिरी बिच पदक बिराजत बज्रमणि
मझारा। दहिनावर्त देत भव नाशे सकल नखेन
बज्रवार २९ रतन जड़ित कंकन बाजूबंद नगन सु
डिका सोहे। डार डार मनु मदन बिटपन कह विकच दे
ख मन मोहे ३० कटि किंकिणि रुनझुन सुनि तन
की हंस करत किलकारी॥ नूपुर धुनि पग लालि प

नैया उपमा कौन विचारी ॥८१॥ भूषन वसन आदि स

व सब रव माता लाड लडावै । राम चंद्रकी देख माधुरी

दरपन देख दिखावै ॥८२॥ निज प्रति विंब विलोक म

करमे हसत राम सावरास । तैसेई लक्षमन भरत श

त्रुहन खेलत डोलतपास ॥८३॥ दशरथ रायन्हाय

भोजनको वैठे अपने धाम । लावो वेगि राम लक्षम

वे॰रा॰
१३२
132

न को सखनि आये सखधाम ॥ बैठे संग बाबा के बा
रो भैया जेवन लागे ॥ दसरथ राय आउ जेवंत है अ
ति आनंद अनुरागे ।१८५। लखु लखु राम राम सख
मेलत आउ पिता सख मेलत । बालकेलि को विस
द परम सख सब समझ नपकेलत १८६ दाल
भात घृत कढ़ी सलोनी अरु नाना पकवान ॥

आरोगत नृप चारि पुत्र मिलि अति आनंद निधान
१८७ अचवन कर पुन जल अचै कायो जब नृप बीरा
लीनो । राम लछण अरु भरत शत्रुहन सबन हिन
अचवन कीनो १८८ बीरा खाय चले खेलन को मि
लिकै चारो बीर । सखा संग सब मिले चरा बर धा
ये सरजू तीर १८९ तीर चलावन सिखे सिखावन

वे॰ रा॰
१३३
133

थर निसान देखरावत ॥ कवङ्क साधु ग्रष्यवधि

आश्रम नानाभांति नवावत १४ कवङ्क वारभान

मिलि अगिया जात परम सुखपावत । हरिन श्रा

दि वह्रजंत किये वध निज सुरलोक पठावत १५।

यहि विधि वन उपवन वहु क्रीडा करी राम सुख

दाई । वालमीक मुनि कही कृपाकर कछुपक सुर

जोगाई ।५२ भई सांझ जननी देखत है कहां गये वा
दो भाई । भूख लगी है है लालन को लावो वेग बुला
ई ।५३ इतने मांझ चार भइया मिल आये अपने धाम
रवेंरुवन आरती उतारत कौसल्या अभिराम ।५४
सौमित्रा कैकई न्हावपावत बडु विध लाड लडावत०
मधुर मेवा पकवान मिठाई अपने हाथ जेवावत ५५

बारो आनन अमित जानिके जननी तब पोढ़ाये ॥
कोपत बरण जननि अप अपनी कछुक मधुर स्वरगा
ये ११६ आई नींद राम सुख पायो दिन को श्रम बिस
रायो । जागे भोर दौरि जननी ने अपने कंठ लगायो
११७ विस्वामित्र बडे मुनि कहियत यज्ञकरत निज
धाम । मारिच और सुबाहु महाभट विघन करत

दिन याम १९८ परब्रह्म अवतार जानकै आये नृपके पा
स ॥ दशरथ राय बहुत पूजा विधि किये प्रसन्न हुलास
१९९ भोजन कर जवहीं जु विराजे तव भाष्यो मुनिराय॰
यज्ञ सुफल कीजै मेरो अव दीजै राम पठाय २०० तव
नृप कह्यो राम हैं बालक मोको आज्ञा कीजै ॥ तव
द्विज कह्यो राम परमेश्वर् वचन मान यह लीजै २०१ ॥

गुरु वसिष्ठ सब विध समझाये राम लषन संग दीन्हे।
मारग में अहिल्या उद्धारी नावक निज पद कीने २-२
विश्वामित्र सिखोई बहु विधि विद्या पनुष प्रकार ॥
मारग में ताडका जु आई बदन पसार २-३ छिन में राम
तरन सों मारी नेक न लागी वार ॥ दीन्ही भक्ति जानि
निज महिमा आये ऋषि के द्वार २-४ कीन्हे विश्वपत्र

वै॰ रा॰
१३५
135

३४

परि सूरन असुर विघ्न को आये । अगिनबान कर दह्न

न कियो है एक समद्र पठाये २५ जनक विदेह कि

योज स्वयंबर बहु नृप विप्र बुलाये ॥ तोरन धनुष

देव त्र्यंबक की काहू जननन पाये २६ विश्वामित्र मु

नि वेग बुलाये सकल सिष्य लै संग ॥ राम लछ

ण संग लिये आपने चले प्रेम रस रंग २७ अहेत हे

उझक झरोखा झांकत जनक नगर की नार । चित
वनि कृपाराम अव लोकत दीनों सुखेज्ज अपार २८
कियो सनमान विदेह नृपतिने उपवन वासो कीनों॰
देखन राम चले निज पुरको सुख सबहिन को दीनों
२९ सब पुर देखि धनुष पुन देख्यो देखे महल सुरंग॰
अद्भुत नगर विदेह विलोकत सुख पायो सब अंग ३०॰

कहत नारि सब जनक नगर की बिधि सो गोद पसा
र सीता जू को बर यह बरिये है जोरी सुकुमार २११
अपने धाम फिर नव दोऊ आये जान भई कछु सांझ
कर डंडवत परसि पद ऋषि के बैठे उपवन मांझ २१२
संध्या भई कृत्य निज कर के कीनों ऋषि परनाम ॥
पौढे जाय चरन सेवा द्विज कर के अति बिसराम २१३

बे॰ रा॰
१३७
137

अस महूरत भयो सवेरो जागे दोऊ भाई ॥ कर परना
म देव गुरु द्विजको जल स्नान कराई २१४ आये
भूप देश देशन के जरी सभा अति भारी । तहां बुला
ये सकल द्विजनको जनक सभा मंझारी २१५ कौ
शिक मुनि तहं अविसी पधारे लिये शिष्य संगमान॰
बले नित्य आह्निक सब कर द्विज उर आनंद न समान ९
३६

दोनौं भ्रात संग मैलीन्हें आये राज दुआर ॥ जहँ बैठे
सब भूप आपसो गाप्यो गरभ अपार २१७ अपने अप
ने भुजबल तोलत तोरन धनुष उदार । कछु नहिच
लत खिसाने भये सब रहे बहुत पचिहार २१८ सीता
कहत सहेलिन सो सुनि यही कहत रघुनंद । तब उ
न कह्यो सकल सुख सागर सोये परमानंद २१९ ॥

वार वार जिय सोच करत हैं विधि सों वचन उचारी ॥
मन क्रम वचन यहै वर दीजो मांगत गोद पसारी २२०
एक वार खर देवी स्रजन भयो दरस सखि मोह ॥ ना
दिन तैं छिन कलन परत है सत्य कहत हो तोह २२१
सब न्रप पचे धनुष नहि टूट्यो तब विदेह डर पायो ॥
क्रोध वचन करि सब सें बोले लखी कीउन रहायो २२२

यह सुनि लक्ष्मण भये क्रोध युत विषम वचन यों बो
ले । सूरज बंश नृपति भूतल पर जाके बल बिन तोले
२२३ कितक बात यह धनुष रुद्र को सकल बिबेक र
लैहौं । आज्ञा पाय देव रघुपति की कनक मेरु हठ
गेहौं २२४ सब के मन कों देख अंदेसो सीता आरत
जानी ॥ रामचंद्र तबही अकुलाने लीन्हों सारंग पा

नी २२५ छिन में कर ले केउ चढायो देखत है सब भूप-
उठिउ नोर भ्यान शब्द भयो जैसें काल को रूप २२६
सबही दिशा भई ध्वनि आन्तर परधाम सुनि पायो ॥
परशु सम्हार सिष्य संग लै के छिन ही मैं तहं आयो
२२७ जै जै कार भयो जगती पर जनक राज अति हरषे ।
सुर विमान सब कौतुक भूले जै धुन सुमनन वरषे २२८

जनकराज नव विप्र पठाये वेगवरात वुलाई ॥ द
शरथ राज वाजि गज लैकै सवही सौज वनाई ॥ २२९
देखन चली वरात विपुल धन लै लै कै जेर मनुज नरि
पार । शोभा सिंधु कहत नहि आवै वरनन करत उचा
र २३- गुरु वशिष्ट मुनि लगन दियो शुभ शुभ नछ
त्र शुभवार । आये जान नृपति मनमाने कीन्ही अति

बे॰रा॰
१५॰
140

मनहार २३१ ब्याह केल सब बरनन कीन्हौं मुनिबा
लमीक अपार । सो सब यहां कह्यो वह कीरत जगत
करी विस्तार २३२ वेद शास्त्र मथ करी ब्याह विधसो
ई कीन्ही व्यवहार । राम लछन अरु भरत शत्रुहन
चार वेदिये विचार २३३ होम हवन द्विज पूजा गन
पति सूरज शक्र महेश । दीनौं दान बहुत विप्रन

३८

को राजा मिथिल नरेश। २३४ खेलत यहि विध ॥
उन सब भये परम आनंद कौं बहुत दाय जो दीनों ॥
भये विदा दशरथ नृप नृप सौं गवन अवध पुर कीनों
२३५ भृगु पति आय जानि जब रघुपति मिले धाय
शिरनाय। दशरथ राय विनय बहु कीन्हों जिय मैं
अति डरपाय २३६ खेलत यहि विध हरि होरी हैं ॥

नवमनि कह्यो पनषकौं तोरेव रुद्र परम गुरु मेरे ॥

रामचंद्र स्वरूप पुरुषोतम नेक नयन जब हेरे २३७

लीन्हौ अंस शिव भृगु पति कौं अपने रूप समायो ॥

कयो जाय तप शैल महेंद्र पै मुनि मुनि वर शिर नायो

२३८ अति आनंद अयोध्या आये कियो नगर शृंगार ।

कदली खंभ चौक मोतिन के बांधी वंदनवार २३९

कियो प्रवेश राज भवननमें रामचंद्र सुखरास ।। अ
द्भुत भवन विराजत रतनन सूरज कोटि प्रकास ४०
द्वादश वर्ष विराजे बालक फिर भूभार हरी । कैकेई
के वचन प्रमाण किये नृप तब यह काज करी २४।
वचन समुझ नृप आज्ञा कीनो देव उपाय करो । राम
चंद्र पितु आज्ञा मानी जिय में वचन धरो ।। २४ ।।

यह प्रभाव उतारन रघुपति बहुत स्रपिन सुख देन॰
वनीवास को चले सिया संग स्रात लिये राजिवनैन
रस्ता मारग मैं हरि कृपा करी है परम भक्त एकज्ञान
तहं ते गये जु चित्रकूट को जहं हो मुनिन को स्थान ४४
बालमीक मुनि बसत निरंतर राममंत्र उच्चार । ना
को फल यह आज भयो मोहि दरस दियो कुमार २४५

पूजा करत्नै पथ पाय भवन मैं राम वेद्र परनाम । कि
यो विविध विधि पूजा कर के ऋषि चरनन सिरनाम
२४६ वहुत दिवस लो वसे जगत गुरु चित्रकूट निज
धाम ॥ किये सनाथ वहुत मुनि कुलको वहु वि
ध सुर काम ॥ २४७ भरत जान जियमैं रघुपति कोउः
सहस परम वियोग । आये धाय संग सब लेके पुर

वे·रा·
१४३
143

वासी नरह लोग २४८ विन दशरथ सब चले नरनहीं कौ
सल पुरके वासी । आये रामचंद्र भाव देख्यो सबकी सि
री उदासी २४९ रामचंद्र भनि सब जन देखे पिता न दे
खन पाये ॥ पुछी बात कह्यौ नव काहू मन बहु विध
बिलखाये २५० वेदरीति करि रघुपति सब विधि भ
रजादा अनुसार । बहुत भांति सब विध समझाये भ

रन करी मनुहार २५१ गुरु वशिष्ट मुनि कह्यौ भरत सों
राम ब्रह्म अवतार । वनमें जाय वहुत मुनि तारे हर
करै भुव भार २५२ पुन निज विश्वरूप जो अपनो सों
हरि जाय देखायो ॥ आज्ञा पाय चले निज पुरको प
भुहि गीत समझायो २५३ कछु दिन वसेज्ञ चित्र
कूटमै रामचंद्र सह भ्रात ॥ तहांते चले दंडका वन

को स्राव निधि सोबल जान २५४ मारग मैं बहु मुनि
जन तारे ग्रह बिराथ रिपु मारे । बंदन कर सरभंगा
महा मुनि अपने दोष निवारे २५५ दरशन दियो सु
तछण गौतम पंचवटी पग धारे ॥ तहाँ उह सूर्पन
खा नारी करि बिन नाक उपारे २५६ यह सुनि खर
र प्रबल दल आये छिन मसाम संहारे । कीन्हे काज

सकल सुर मुनि के भव के भार उतारे २५७ मुनि सुता
ल आश्रम जगाये हरि बहु विध पूजा कीन्ही ॥ दिव्य
वसन दीने जब मुनि ने फिर यह आज्ञा दीन्ही २५८
दश कंधर को बेग संघारी हर करो भव भार ॥ लोपा
मुद्रा दिव्य वस्त्र लै दीने जनक कुमार २५९ सूर्पन
खा जब जाय पुकारी नाक कान ले हान ॥ रावन

क्रोध कियो अतिभारी अधर फरक अति गात २९०
गयो मारीच आश्रम हित वही बानै बहु समझायो·
तब मारीच कह्यो दशकंधर विनती बहुत करायो
२९१ रामचंद अवतार कहत है मुनि नारद मुनि पास·
प्रगट भये निश्चर मारन को मुनि वह भयो उदास·
२९२ कर गहि खडग तोर वध करि हो मन मारिच

उर मार्‍यो ।। रामचंद्र के हाथ मरेंगो परम प्रकष फ

ल जान्यो २६३ कपट कुरंग रूपधरि आयो सीता

विनती कीन्ही ।। रामचंद्र कर सायक लैके मारन

की विध कीन्ही २६४ मारेउ धनुषबान ले ताको

लछमन नाम पुकारेउ । लछमन नाम सुनत

तहां आये श्रीमत उष विचारेउ २६५ धरिके कपट

बे·रा·
१७६

176

भेष भिक्षुक को दशकंधर तहां आयो । हरि लीन्ही छिन
मैं माया करि अपने रथ बैठायो २६६ चल्यो भाज गोसाइ
जेन जैयों लेके हरि को भाग । इतने रामचंद्र तहां आये
परम पुरुष बडभाग २६७ जब माया सीता नहि देखी
जिय मैं भये उदास । पूछन लगे राम द्रुम गन सों बच
न बढ्यो दुख त्रास २६८ मारग मैं जटाइ खग देख्यो वि

कल भयो तन हीन । विनती करी राममैं तासो वहुत
लराई कीन २६९ जब तन तज्यौ गृध्र रघुपति तब ब
हुत करम विधि कीनो २७० जाम्यो सरवो राय दशरथ
को अपनी निजगति दीनी २७० मारगमें कबंध रि
पु मारेव सुरपति काज सवारेव । पंपा सर हरि
तरत पधारे जलको दोष निवारेव २७१ शिवरी परम

बे॰रा॰
१४७
147

भक्त रघुपतिकी बहुत दिनन की दासी । ताके फल
पायो रघुपति दरस भक्त प्रकासी २७२ दीन भक्ति
निज पुरकी ताको तब रघुपति चले आगे ॥ सीता
सीता बिलपत डोलत परम बिरह सौं पागे २७३ ॥
खेलत यहि बिध हरि हेरी हेरो ॥ रबिनंदन जब मिले
रामको प्रभु भेटे हनुमान ॥ अपनी बात कही उन ह

तिसो वालि बडो बलवान २७४ सप्तताल वेधन हरि
कीन्हों वाली तिनकमैं तारो ॥ दीनो राज राम रवि
नंदन सब विध काम सवारो २७५ सप्तदीपके कपि
दल आये जरो सेन अति भारी । सीताकी सुध लैन
चले कपि ढूंढत विपिन मझारी २७६ जल निध
तीर गये सब कपि मिल सुनि संपातिकि वानी ॥

लंक वसत सीता रिपु वनमें सब वानर यह जानी २७७
रामचरण कर सुमिरन मनमें चले पवन सुत धाय ०
राम प्रताप विघन सब मेटे पैठे नगर सुखपाय २७८
धरि लघु रूप प्रवेश कियो कपि लंका नगर मझार ०
राम भक्त निज जान विभीषन भेटे हरि येकबार २७९
तव वाने सब भेद बतायो देखी कपि सब लंक । राम

चरण धरि हृदय मुदित मन विचरत फिरत निशंक

२८० जाय असोक वाटिका देखी दरशन सीता कीन्ह ॥

कर दंडवत बहुत विनती कर राम मुद्रिका दीन्ह २८१

सब संदेस कह्यो कपि सिय प्रति सुनि हिय में परितोष्यो ।

राम संदेस कह्यो तब सीता जो बूझो सो भाष्यो २८२ ॥

लागी भूख चले उपवन में नाना विध फल खाये ॥

वे·रा·
१५९
159

विटप उखार उजार् विपिनको सवहिनको रस साये
२८३ खनि प्रकार निशिचर वहु आये कूदिसवनि से
घारे ॥ इंद्र जीत वल निय जव आयो ब्रह्म अस्त्र उन
डारे २८४ तासौं वंधे दशानन देखन चले पवन सु
त धीर ॥ रावन वहुत ज्ञान समझायौ कथ्य कथ्य क
ह्या गंभीर ॥ चले छुडाय छिनक में तवही जारदई

सब लंक ॥ कहि विभीषन राज तन को जयकर ज्यों सब

राजनि संक २८६ आये तीर समुद्र मिले कपि मिले

आय जहं राम ॥ सुनि सुनि कथा श्रवन सीता की उ

लंकिन अति अभिराम २८७ करि कपि कटक चले

लंका की छिनमें बांध्यो सेत ॥ उतर गये पहुंचे

लंका पै विजय ध्वजा संकेत २८८ पटये वालि ऊमा

र विनय कर समझाये वहुवार । विन नहि धरी काल
वस जाग्यो फिर आये सुकुमार २२४ असरन सरन उदा
र कल्यानरु रामचंद्र रनधीर । रिपुभ्राता जाग्यो जवि
भीषन निश्चर कुटिल सरीरँ राख्यो सरन लेकेश कि
यो सुनि जव निश्चर सव मारे । माया करी वहुत नाना
विध सवको राम निवारे २२५ कुंभकरन अन इंद्रजीत

यह महा बली बलसार । छिन में लिये सोषसबनि ब
रज्यौं तथी बली अपार २५२ कियो प्रसाद शोभना कर
कै राज बिभीषणादीनौं । पुनि मंदोरि अबल आश दै
अभयदान सब कीनौं २५३ समाधान सुरगन को कर
कै अमृत मेघ बरषायो । कृपा दृष्टि अवलोक कर
कै हत कपि कटक जिआयो २५४ निस्तार किये सक

वे॰रा॰
१५८

१५१

सब साथब तौनै जियै न कोय ॥ निरभय कियो लंके

स विभीषण राम लषन नृप दोय २२५ सीता मिली

बहुत सुष पायो धरो रूप निज मायो ॥ पुष्पक या

न बैठके नीके चले भवन सुष छायो २२६ चले पव

न सुत विप्र रूप धरि भरतहि दैन वधाई ॥ जानि

दूत रघुपति को प्रभुदित भरत मिले नव धाई २२७

सुनत नगर सब हित सुख मान्यो जहं तहंन नै वलेथा
ई ॥ रामचंद्र मुनि मिले भरत सौ आनंद उर न समाई ९८
कियो प्रवेश अयोध्या मैं नव घर घर वजत वधाई ॥ मं
गल कलश धराये द्वारे वंदन वार वंधाई २९९ राजभ
वन मैं राम पधारे गुरु वशिष्ट दरसायो ॥ शीस न
वाय वहुत सुजाकर सुरज वेस वधायो ३०० ॥

सभा थान सबहिन को कीन्हों सो दरसन को आयो ॥
कौसल्या कैकई सुमित्रा मिल मनमे सुख पायो ३-१
बैठे राम राज सिंहासन जगमें फिरी दुहाई ॥ निर्भय
राज रामको कहियत सुरनर मुनि सुख पाई ३-२
चार मूर्ति धरि दरसन आये चारवेद निजरूप अस्तु
ति करी बहुत नाना विध रीझे कौशिल्यभूप ३-३

शिव बिरंचि नारद सनकादिक सब दरशन को आये ।
राम राज बैठे जब जाने सब हित मन सुख पाये ३·४
लोकपाल अनही मन हरषे सब सुमनन बरषाये ॥
पुष्प बिमान बैठ हरि आये लै कुबेर पहुंचाये ३·५ ॥
अति आनंद भयो अवनी पर राम राज सुखदास ॥
कृतयुग धर्म भये त्रेता में सरनरमा प्रकास ३·६ ॥

अस्वमेध बहु यज्ञ किये पुनि पूजे द्विजन अपार ॥ हय
गज हेम धेनु पाटंबर दीन्हें दान उदार ३७ चौबिन अने
क किये रघुनायक अवधपुरी सुख दीनौ ॥ जनक
सुता बहु लाड लड़ावत निपट निकट सुख कीनौ ८
जोन बसंत बहुत द्रुम फूलै जनक सुता अनुरागे ॥
प्रेम प्रवाह प्रगट प्रगटायो होरी खेलन लागे ३·९

कवहुंक निकट देषे वरषा ऋतु झूलन सुरंगा ॥
हिंडोरे रमकत जमकत जनक सुता संग हाव भाव
विन वोरे ३१० कवहुं कमल सरोवर उपवन जनक सु
ता संग लीने ॥ नाना जल विहार विहरे है संतजन
न सुषदीनें ३११ कवहुंक रतन महल चित्रसारी
सरद निसा उजियारी ॥ वैठे जनक सुता संग वि

लसत मधुर केलि मनुहारी ३४२ कबहुंक अगार अपना
ना विध लिय सखोंय सुखकारी ॥ कबहुंक निरतन दे
व नदी लखि रीझत हैं सुखभारी ३४३ राम विहार क
ह्यो नाना विध वालमीक मुनि गायो ॥ वरनत चरि
त विस्तार कोटि सतन अपार न हि पायो ३४४ सब सत
इकी भेद भई यह कवि वरनन कहा करै है ॥ कहत

चरित रघुनाथ सरस्वती वैरी मन अनुसरिहै ३१५ अप

ने धाम पठाय दिये नव पुर वासी सव लोग ॥ जैजै जै

श्रीराम कल्यानह प्रगट अयोध्या भोग ३१६ दुष्टनृपति

जब वैदे भवपर धरि भृगु पतिकौ रूप ॥ छिनमै भुव

को भार उतारेव परसुराम द्विज भूप ३१७ व्यास रूप

कै वेदविस्तारे कीन्हे प्रगट ग्यान ॥ नाना वाक्य धमै

पाषन को तिमिर हरन भव भारन ३१८ उह रूप क
लि धर्म प्रकाश्यो दया सबन की मूल ॥ हरकियो पा
खंड वाद हरि भगतन को अनुकूल ३१९ कलि के आ
दि श्वेत हूनन प्रथा के है कलकी अवतार ॥ मारिम ले
त धर्म फिर थाप्यौ भयो जगत जयजयकार ३२० कर्म
वाद पाषनकौ प्रगटे रिषि गर्भ अवतार ॥ स्वयापान

दीन्हों स्वरगनको भयो जग यश विस्तार ३२१ असुर
न को व्यामोह कियो हरिधरो मोहनीरूप ॥ अमृत
पान कराय सुरनको कीन्हे चरित अनूप ३२२ तैसेंही
भव भार उतारन हरि हलधर अवतार । कालिंदी आ
कर्ष कियो हरि मारि दैत्य अपार ३२३ गज अरुग्राह
लरे जल भीतर तब हरि सुमिरन कीन्हों ॥ छोडगह

उ सुखधाम सांवरो भक्तन को सुख दीन्हो २२४ जब
वडु असुर वढि पृथिवीपर कियो अनर्थ विस्तार ॥
सत्यसेन प्रगटे विश्वंभर सत्य कियो है अपार २२५ ॥
निज वैकुंठ वसाय रमापति कियो रमा को हेत ॥
विनती सुनि कमला की केशव कीन्हों सुख संकेत
२२६ ब्रह्मचर्य थापन के कारण धरो विष्णु अवतार ॥

जहं तहं मुनिवर निज मरियादा थापी प्रगट अपार

१२७ अजित रूप है पीठ धरी हरि जल निध मथवे का

ज ॥ सुर नर असुर चकित भये देखत किये भक्त के

काज १२८ जब बलि राजा गये देवपुर लीन्हों स्वर्ग छु

डाय ॥ अदिति दुखित भई कश्यप सों विनती करी

सुनाय १२९ तब कश्यप मुनि कह्यो पयो व्रत विधि सों

बे॰ ग॰
१५८
157

करी बनाय। ताकी कूख जन्म हरि लीन्हौं श्रीवाम
न सुखदाय ३३० भादौं श्रवण द्वादशी शुभ दिन ध
रो विप्र हरि रूप ॥ शिव विरंचि सनकादिक आये
वन्दनको सुखभूप ३३१ यज्ञउपवीत विधोक्तकि
यो विधि सब स्वर भिक्षा दीनी ॥ वामन रूप बले
हरि द्विज वरबलिको मन सुख कीनी ३३२ देउ क

मंडल हाथ विराजत ओर ओडे म्रगछाला ॥ धरि
वटुरूप चले वामनजू अंबुज नैन विसाला ३३३
सूरज कोटि प्रकाश अंगमैं कटिमैं खेला विराजै ॥
करी वेद धुनि रूप हीरैपं मनहु महा घन गाजै ३३४
सुनि धाये नवहीं वलिराजा आय चरण सिर नायो ·
विनती करी वडुन सुखमासो आज भयो मन भायो ३३५

बलियै विप्र यज्ञ शालामैं जहां द्विजवर सब गाजैं । श्रा
ये ब्रह्म सभामैं वामन सूरज तेज विराजैं ३३६ तब न्
पकह्यो कछु द्विज मांगो रतन भूमि मणि यान ॥ ह
य गज हेम रतन पाटम्बर देहौं प्रगट प्रमान ३३७ ॥
तब बोले वामन यह बानी सुन प्रह्लाद कुल भूप ॥
बडन प्रति ग्रह लेत विप्र जो जाय परत भवकूप ३३८

तीन पैंड बसुधा हम पावैं पवन कुटी एक कारन ॥
जब नृप श्रव संकल्प कियो है लागो देह पसारन ३३५
एक पैंडमैं बसुधा नापी एक पैंड सुरलोक ॥ एक पै
ड रीझे बलि राजा तब है हो बिनशोक ३३६ नापो देह
हमारी द्विजबर सो संकल्पित कीन्हो ॥ सुन प्रसन्न
बामन यों बोले तै मोकूं बस कीन्हो ३३७ सदा द्वार

नेरे ठाढो है दरशन देहौं तोहि ॥ माया काल कबहुं
नहिं ब्यापै सुमिरन करतै तोहि ३४२ सुतल लोक मै
थिर कर थाप्यो जहं विभूति अति भारी । गहि कै बा
दा द्वारपर ठाढे वामन ब्रह्म मुरारी ३४३ स्वर्ग लो
क दीन्हौं सुरपति को पुनि थिर करकर थाप्यौ । नि
गमनेति कहि रटत निरंतर देव शत्रु सब कांप्यौ ३४४

वामन रूप ब्रह्महरि प्रगटे जिनको यश जगगावै ।।
शेष सहस मुख रटत निरंतर सुर पार किम पावै ३४५
पुन बलिराजहि स्वर्ग लोकमें थाँपेगो हरिराय । सावि
भौम अवतार धरेंगे श्रीवामन सुखदाय ३४६ पुनि
विभु रूप एक हरि लैंगे सकल जगत कल्यान । रूप
ट खंड पाखंड भ्रमर को थापे भक्त निदान ३४७ ।।

बे·रा·
१६०
160

बिषकसेन रूप हरि लैंगे कीन्हो सिवको हेत ॥ असु
र मार सब नरन बिडारे दीन्हे रुद्र निकेत ३४८ धर्मसे
न है धर्म बढायो भुवि को धारन कीनो ॥ शेष रूप है
धरा सीस फिर सब जग को सुखदीनो ३४९ अंतर
यामी पालन कारण निज सुधर्म धरि रूप ॥ अन्न
दान दै सब जग पोष्यो किये काज सुरभूप ३५० ॥

योग पंथ पातंजल भाष्यो सोउ छीन जब जान्यो । यो
गेस्वर वपु धरि हरि प्रगटे योग समाध प्रमान्यो ३५१ ॥
क्रिया पंथ कर्मनि ने जो भाष्यो सो सब भ्रष्ट मिटायो ॥
ब्रह्म भाव है कै हरि प्रगटे छिन में फिर प्रगटायो ५२
यह अनेक अवतार कृस्न के को करि सकै बखान ॥
सोई सूरदास ने बरने जो कहै व्यास प्रमान ॥ ३५३ ॥

अैस कला अवतार श्यामके कबिपै कहत न आवै-
जहं जहं भीर परत भक्तन को तहं तहं वपु धरि धावै
३५४ माया कला ईश वनगानन वनखंड परिछ्रप-
वाइ वरुण अरु यम कुबेर शशि मरुत अगिन सुर
भूप ३५५ रवि शशि मरुत मरीच सुर गुरु अरुवार
वेद वपुजात । जगकौं प्रगट करन परजापति व

गरे कला निधान ३५६ जोजो भूप भये भव मंडल
लोक पाल निजजान ॥ निज महिमा हरि प्रगट क
रीहै विधि के बचन प्रमान ३५७ सुर ग्रह ग्रसुर रची
हरि रचना सो जग प्रगट सब कीन्ही ॥ क्रीडा करी
बहुत नाना विधि निगमबात दृढ कीन्ही ३५८ य
हि विध होरी खेलन बहुत भांति सुख पायो ॥ यहि

वे॰ गा॰
१६२
162

अवतार जगतमैं नाना भक्तन चरित दिखायो ३५५
अंश कला अवतार बहुत विधि राम कृष्ण अवतारी॰
सदा विहार करत व्रजमंडल नन्दसदन सुखकारी
३६० नित्य अखंड अनूप अनागति अवगत अनंत
अनंत ॥ जाको आदि कोऊ नहि जानत कोऊन पा
वत अंत ३६१ जब हरि लीला की रुचि कीन्ही प्रगट

करन विस्तार । श्रीवृषभान सुपहे प्रगटे धनि ब्रज

राज उदार ३६२ विद्या अलकही यसमति सौं जा

की स्वरूप उदार । सोरह कला चंद ज्यों प्रगटे दीनों ति

मिर विदार ३६३ सुत वसुदेव देवकी कहियत पहि

ले हरि वर पायो ॥ दूसरा भाग्य प्राय हरि प्रगटे यह

जल नापत साप्यो ३६४ आदेउह रोहनी आई शांव

चक्र वपु धारो । कुंडल लसत किरीट महा अति वपु
वसुदेव निहारो । अस्तुति करी बहुत नाना विध
रूप चतुर्भुज देखौ । पीतांबर अरु श्याम जलद
वपु निरखि सुफल दिन लेखौ ३६६ तब हरि कह्यो
जन्म तुम्हरे गर्भ तीन वार हम लीन्हो ॥ पृस्नीगर्भ
देव ब्राह्मण को छलरूप रंग भीन्हो ३६७ मागो सक

ल मनोरथ अपने मन वांछित फल पायौ ॥ शंख
चक्र गदा पद्म चतुर्भुज अजन जन्म लै आयौ १६८
यह भव भार उतारन कारन हलधर को संग लायौ ॥
क्रीडा करी लोक पावन कर करी भक्त मन भायौ १६९
प्राकृत रूप धरो हरि छिनमें शिशु ह्वै रोवन लागे ।
नव वसुदेव देवकी निरखन परम प्रेम रसपागे १७०

बे-रा
१६४
164

नव देवकी दीन ह्वै भाष्यो रूपको नाहि पतीजै । ऐसो
वसुदेव जाव लै गोकुल कह्यो हमारो कीजै ॥ ३०१ ॥
नव लै हरि पलना पोढाये पीतांबर जु ओढायो । न
व वसुदेव शीस धरि पलना भयो सबन मनभायो ३०२
गोकुल चले प्रेम आतुर है खुलगाये कपट कपाट ।
सोये स्वान पहरुअ अरु सोये सबै मुक्त भई वाट ३०३

नव वसुदेव लियो कर पलना अपने शीश चढायो ।
रैन अंधेरो कछु नहि सूझत अटकर अटकर आयो ७४
शेष सहस फन ऊपर छाये चनकी वेद बतावैं । आगे
सिंह डुंकारत आवत निरभै बाट जनावैं ७५ जमु
ना अति जल हर बहनहै चरण कमल परसायो ॥
मारग दीन्हौ राम सिंधु ज्यौं नन्द भवन चलि आयो ७६

पहुंचे आय महर मंदिर में नेकन संका कीनी । बाल
क धरि लैकै सुरदेवी तुरत गवनकी कीनी ॥ ३७३ ॥
लै बसुदेव तुरत घर आये काहु जिय न हि जाने । जब
वह रोवन लागी तब सब जाग परे अकुलाने ३४ बाल
क भयो कह्यो नृप सौं जब दौरि कंस तब आयो । कर
गहु खड्ग कह्यो देवकि सौं बालक कहँ पहुचायो ७५

नव देवकी अधीन कह्यो यह मैं नहिं बालक जायो ॥
यह कन्या मोहि बकस वीर तकीजे मो मन भायो ७६
कंस वंस को नास करत है कहा समझ बिसरायो ॥
मोको भई अनाहद ववनी नातें डर नहि जानी ३७७ क
र मो गल लई नव राजा नेक शोक नहि आनी ॥ पट
कत सिला गई आकासै कंस अनीत न मानी ३७८।

भई आकाश बानी ख्वरदेवी केंस यहो अब आई । तेरो
शत्रु प्रगटे वज्र व्रजमैं काज लाग्यो नहि जाई ७९ ॥
जैसे मीन करत कल क्रीडा जलमैं रहत समाई । त्यो
तब काल प्रगट एक कहत हैं लषण सकत न तेहि
कोई । ८० अंतर ध्यान भई ख्वरदेवी केंस प्रतीत जो
मानी । तब वसदेव देवकी के गृह केंस गयो यह

जानी २८१ क्षम अपराध देहु की मेरो लिख्यो न मेट्यो

जाई । मैं अपराध कियो सिसु मारे कर जोरे बिलखाई ।

२८२ सुन गृह आय सेज पर सोयो नेकु नींद नहि आवै ।

देश देश के दूत बुलायो सबहिन मतो सुनावै ॥ २८३

दीन हीन जो अक्षर बाचत बलि करत सकल मुनि ते

सो । हुक्म नहि तन भार उतारेव जलको मोखन जैसो

भयो भोर यसुमति गृह आनंद मंगल चार बधाई ॥ जा
गो महर पुत्र मुख देख्यो आनंद उर न समाई ३८५ जैसे
शशि प्रगटत प्राची दिशि सकल कला भरि पूर । यसु
मति कूप आय हरि प्रगटे असुर तिमिर कर दूर ३८६
नंदराय घर ढोटा जायो महर महा सुख पायो ॥ वि
प्र बुलाय वेद धुनि कीनी स्वस्ती वचन पढायो ३८७ ॥

रागिनी बंगाली ताल ३ ॥ गजल शैर ॥ टुक हिरस
हवा को छोड मिया मत देस विदेस फिरे मारा ॥ क
जाक अजल का लूटे है दिन रात बजा कर नक्कारा ॥ का
भैसा वधिया बैल शुतर क्या गोने पला सिर भारा ॥
क्या गेहूं चावल मोठ मटर क्या आग धुआं औ क्या अंगारा॰
सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा १ ॥

बं॰ना॰
१६८

168

गाहै तलकखी बनजारा और खेप भी तेरी भारीहै ॥
ऐय गाफिल तुझसे भी चढता एक और बडा ब्योपा
रीहै ॥ क्याशक्कर मिसरी कंद गिरी क्या साम्भर मी
ठा खारीहै ॥ क्या दाख मनक्का सोंठ मिरच क्या केस
र लौंग सुपारीहै २ तूबधिया ला देवें तूभरेजो
पूरब पच्छिम जावेगा ॥ यासूद बढा कर लावे

गा या घाटा बाधा पावेगा । बटमार अजलका रस्तेमें
जब भाला मार गिरावेगा । धनदौलत नाती पोता
क्या एक भनगा पास न जावेगा ॥ ३ ॥ हर मंजिल
में अब साथ तेरे यह जितना डेरा डांडा है ॥ जरदाम
दिरम का भांडा है बंदूक सिपर और खांडा है ॥ जब
नाइक तनका निकल गया जो मुलकों हांडा है ॥

वे॰ग॰
२८५
169

फिर टोडाहै में भेडाहैने हलुवा हैने मोडाहै ४ ॥
जब चलते चलते रस्तेमे यह गोन मेरीफल जावे
गी ॥ एक वधीया तेरी महीपर फिर चढने वास
न आवेगी ॥ यह खिपजो तने लादीहै सब हिस
सोमें बट जावेगी ॥ धीहन जवाई बेटा क्या बनजा
रा पास न आवेगी ॥ ५ ॥ कैयों नाहक बोझ उ

ठा नाहै इन गौनौ भारी भारीके । जब काल लुटेरा

आन पड़ा फिर हूनेहै ब्योपारीके । क्या साजजड़ाऊ ज

र जेवर क्या गोटे थानकीनारीके । क्या घोड़े जीन सु

न हरीके क्या हाथी लाला अमारीके ६ जो खेप भरे

तू जाताहै यह खेप मिया मत जान अपनी । अब को

ई घड़ी पल साअतमै यह खेप बदनकीहै खपनी ॥

नखेने शाल दुशालोंके ॥ ८ ॥ ऊछु काम न आवे
गा तेरे यह लाल जमर्रद सीमो जर ॥ सब पूंजी गा
टमैं बिखरेगी जब आन बनेगी जोऊर ॥ क्या मसने
द नकिए महल मकान क्या चौकी ऊरसी नखेनछु
नर ॥ क्या मालखजाना महल मकान दौलत
हशमत फौज लशकर ॥ ९ ॥ यह धम धडका सा

ये लिये क्यों फिरता है जंगल जंगल । एक मूमगा
पासन आवेगा मौकूफ हुआ जब अन्न और जल ॥
बर बार अटारी चौपाये क्या खासा ननसुख क्या म
लमल ॥ क्या बिल बनत कीये रेशम को क्या ला
ल पलंग का रंग महल ॥ ९ ॥ क्या उखेन म
कान बनता है हे खंभ तेरे तन का पोला । ते ऊंची

गाड़ी उतरता है यहां गोरखगढ़ने यह बोला ॥ कारे
नी खेद करन्द वहां का कोट कंगूरा अनमोला ॥
कागजों में हला तोप किला काशी शादाह रौर गो
ला ॥ ११ ॥ अब काल फिरा कर चावक को यह बै
ल वदन काहां केगा ॥ कोई नाज समेटेगा तेरा
कोई गौन लिये और टोकेगा ॥ होफेर अकेला जेगा

वे॰ग॰
१८२

172

लमें तंबाक कल हदकी फाकेगा ॥ उस जंगलमें
जब आहनजीर पकने लगा आनन झोंकेगा ९२ ॥
यह पैंट अजावहै दुनियांकी और क्या क्या जिनस उ
कटीहै ॥ यहां मालकीसीका मीठाहै और बीज कि
सिकी खेहीहै ॥ ऊख पकताहै ऊख बनताहै प
क बान सिहाई पहीहै ॥ जब देखो छवनो आगिव

रको नेलहा भाउन महीहै ॥ गल शोर बबूला आगार
वा शोर कीचड पानी महीहै ॥ हम देखे उके ईस उ
नियोको सब धोखेकीय सीहीहै ॥ कोई नाजवे दीदे
हेस हेस कर कोई नावेनगा जावन घानाहै ॥ कोई क
पडे देगेपहगोहै कोई गटडी शोढे जानाहै ॥ कोई
भाई बाप चाचा मामा कोई मानी मन कहा नाहै ॥

जब देखा खूबनो आखिरकोमे दिखलाईहैने नानाहै
इगलशोर । कोई सेठ महाजन लाखपती जेवजाज
कोई पम सारीहै ॥ यहा बाजा किसीका हल काहै
और खेप किसीकी भारीहै ॥ क्या जानेकोन खरी
देहै और किसने जिनस उतारीहै ॥ जब देखा
खूबनो आखिरको दलाल न कोई ब्योपारीहै १४

कोई झलके बैठे मसनंद पर कोई रोवे अपनी दौलत
को ॥ कोई बोले अपना मजसेला और मेरा हेसा मज
कोरे ॥ कोई लडना है कोई मरना है जगडे हक और
नाहक को ॥ जब देख छुवनो आखिरको कबुले
ना एक न देना दो १५ रम्माल नजूमी आ मिल है
और फाजिल मला स्यानाहे ॥ कोई आमिल कामि

बे. गा.
१२४
124

तदाना कोई मस्त सिद्दा दीवाना है ॥ तावीज फतीला
फालफहे और जादु मंतर लाना है । जब देखा खू
बनो आखिरको सब हीला मकर बहाना है २६ । को
ई लोटे हुवे गलियोंमे तैयार किसीका बेरा है ।
नित कजीये झगडे रहते है यह मेरा है यह तेरा है ॥
जब देखा खूबनो आखिर कोन मेरा है ॥ २७ ॥

कोई टोपी टोप बनाताहै कोई चोया फिरा अम्मामाहै ॥
कोईसाफ बरहना फिरताहैने पगाड़ी न पाजामाहै ॥
कम क्रोध गाजी और गाढेका नित कजीयाहै ॥ जब
देखा खूबतो आखिर कोने पगाड़ीहैने जामाहै १८
कोई बाल बढ़ाए फिरताहै कोई सिरको घोट मुड़ा
ताहै । जब देखा खूबतो आखिरको सब छोड़ अकेला

बे·रा· १७५

175

जाता है ।१९। कोई रोता है कोई हसता है कोई नाच
है कोई गाता है । कोई छीने झपटे ले भागे कोई धोम
डर दिख लाता है । कोई माल इकट्टा करता है कोई
कुंजी कुलफ लगाता है । जब देखा हवनो आखिर सब
झगड़ा रहा जाता है २० कोई बेबे भेरा सराब ग्रफ ए
म कही हथ दही की फेरी है ॥ कोई पला सिर पर

लागाहै कोई लाटैवै लमकेरीहै । कोई ऊगाडे ग्रपनी

जागाह पर यह मेरीहै यह तेरीहै ॥ जब देखा छिवतो

आखिर कोन तेरीहै न मेरीहै नतेरीहै ॥ कहीं वली

टेकी धनीहै कहीं खोसी कडवकी डलीहै ॥ कहीं

वलनी ब्याज पिटारीहै कहीं वलहा वकी डलीहै ।

तरकारी वैगन साग हरा गूड गाजर मूलीहै ॥

वे॰ग॰
१७६

176

जब देखो ह्वबनो आखिरको मब बिकरी देखेनम्
लीहै २२ कहीं थान भ्रटेमन टाट पगजी कहीं दमर
ख चमरखेन कलाहै ॥ कही येक रुपयेका खुरदा
कहीं कौडी पैमा येलाहै ॥ कहीं छुटना छाज पि
टारी है कहीं बिकना खोट खरो लाहै ॥ जब देखो
ह्वबनो आखिर कोने पीही खोट न परखोहै ॥ २३॥

कोइ शिकरा बाज उडाताहै कोई हाथमें रखके नचती

है ॥ शरबाज कोईले बैठाहै और दौड किसीने उड़ती

है ॥ हैनार किसीके हाथोंमें और नाचती फिरत उन

ली है ॥ जब देखा खूबतो आखिर कोनसे शमस न

न सकती है २७ अब किस्का रंग बुरा कहिये और

किस्का रूप भला कहिये । एक दमकी पैठ लगी

है यह अस्बोहम जा वरखा कहिये ॥ येसैरत साशादे
नखजीर अरकजा कहिये रेजा कहिये । कछु वात
नहीवन आनेकी उप वाप भलाहै क्याकहिये । ग
लशोर वहुला आगहवा औरकी वड पानी सहीहै ॥
हमदेखचुके इस दुनियांको सव थोखेकी सटीहै २५
वटमार अजल्का आपडेवा टक इसको देखडरो वावा

अब षाकबसर हो आवोंसे और आहैं सरद भरो बाबा ॥
दिल हाथ उठा कर जीने से बे गम मन मार मरो बाबा ॥
जब बाप की खातिर रोते थे अब अपनी खातिर रो बा
बा ॥ तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर जीन धरो बा
बा २६ जब जीने को गम हाबसनदो और मरने को
मह मान करो ॥ वैरान करो इह सान करो याखन्न

करो या दान करो ॥ या पूरी लड़ बटवा खोया खो
सा हलवा नान करो ॥ उज्ज लतफ नहीं अब जी
नेमें अब चलने का सामान करो ॥ २७ ॥ तन
रूपा ॥ दिल काटे अपना जीनेसे अब और गलेको
मन काटे ॥ अब चाट फनाकी इक चखो और
छिन किसीका मन काटे ॥ अन छोडो हिस्से ब

खैरकी और भाजी अपनी तुम छोडो ॥ नाके दव छोडे
कूद छुके अब और उलनी मन छोडो २८ यह अस व
हुत कूदा उछला अब कोडा मारो जेर करो ॥ अब मा
ल इकट्ठा करनेसे अब तनका अपने फेर करो ॥ गा
फ टूटा लशकर भाग छुका अब ज्ञानमें तुम थान शे
र करो ॥ तुम सांझ लडाई हार छुके अब भागनेमें म

न देर करो ॥ ३९ ॥ सिर कोंपा चोटी बालङ्ग एमङ्ह
पीला पलकै आन झुकी ॥ कद टेढा कान डूप वह
रे और आंखें भौंह पलाय गई ॥ ख्वाबे नींद गई और भू
ख घटी दिल खसलङ्आ आवाज नहीं ॥ जो होंनी थी
सो हो गुजरी अब चलनेमे कुछ देर नहीं ३० ॥ इस
पाव बिसट कर चलनेसे मत रस्लेको हैरान करो ॥

और पोपले महसे रोटीको मन मल मल कर हलका
न करो ॥ अब आपडूप तेम पानीसे मन पानीका न
कसान करो ॥ कछु लाभ नहीं इस जीनेमें अब मरने
से परहवां न करो ॥ ३१ ॥ कपनाल ॥ ज्ञान मध
माते सोनरकै ये जिनको रहतहैं निस दिन खुमा
री ॥ ज्ञान मध पीवत भेहैं खुमारी सबन अंतर खे

वे॰रा॰
१८०
180

ले लगी रहनारी ॥ अनेहद्बन मेरी सदा निसता सार
नरक स्वर्ग भाग गये इक बारी ॥ कहत कबीर सु
नो भाई मारो गुरुकीनो पीन मोहे हरहूसे प्यारी ३२
कवित ॥ ताल ॥ झूलफाक ॥ पहरे आई नव स
त अबरन अतही सुंदर लग्या वहोत सियानी ॥ गो
रे वदन पर अलकां छूटी मानो चंदन ले घटानी ॥

मृगासे नैना कोकिल बैना कटके हर गजचाल सुहा

नी ॥ याहे वहा इन येबछव निरखत इंद्रलोककी अप

सर विसरानी ॥ ३३ ॥ ख्याल ताल ३ ॥ छुटगल

वांह प्यारे भोरभै अंइना ॥ दीप वाकी जोत चटी वे

दहेका चांदना ॥ मोतनके हार सीतल फुरिआयो

अंजना ॥ ३४ ॥ ख्याल ताल ३ ॥ साडे ताल बो

वे॰ गा॰
१८१

18

लीवै आमीवै वेजेटै आवोपैगामि आलोदी ओगालि
आ ॥ हथ छुडि मोडे कारी कमरीया वाप असाडे दे
या पालिआ ॥ ३५ ॥ दपाल नाल ३ ॥ मीयां राजावे
मोणा निन साडे आडोदा ॥ माउही गल मनदा नहि
आपना आपजनामदा ॥ कोई ममजाउआ कौ पेखप
मावद दिखलामदा ॥ ३६ ॥ दपाल । नाल ३ ॥

पै गल मैनूं नै दसीवे मीयां सोणिदे आमनदी उगाही

सिउआ दैंदा ॥ मै वेदन मेरा अजब पहरावा केली ते

है गल हसिवे मीआंदा ॥ ३७ ख्याल ताल १ बहुत

लागी वे मीयां मैडी तैडे नाल नसी जाणदे नाहीं खो

न योवन प्यारा विरजना जीवे ईशक नसाडे नपठ

गी ॥ ३८ ॥ इतिशैरगजल ॥ ॥

ཁེ་ཀ་
༡༨༢

मिळति सखा मेवाय विंवाधरे । अशोकेन दले

जरु तणा मिह भुजेप लक्ष्मीलव क्रौने दास इवो

प सेवित पदां भोजेजनः संभ्रमः ७१ सा ससाधस

सानंद गोविंदे लोल लोचना सिंजान मंजु मंजीरं

प्रविवेश निवेशनं ७२ श्रुति क्रमया पांगं सुवणा

पथ पर्यंत गामन प्रवाम्रे नेवानागो स्तरल नरना

रा·म·
गी·

रम्भान्तितयोः । तदानीं राधायाः प्रियतम समालोक
समये पपात स्वेदाम्बु प्रसर इव हर्षाश्रु निकरः
७३ भजन्त्यास्तल्पान्ते कृत कपट कण्डूति पिहित
स्मितं याते गेहाद्बहिरव हितालो परिजने । प्रियास्यं
पश्यन्त्याः स्मर शर समाकूत सुभगं सलज्जा ल
ज्जा व्यगम दिव दूरं मृगदृशः ७४ ॥ अष्टपदी ॥

राधावदनविलोकनविकसितविविधविकारवि
भंगं। जलनिधिमिव विधुमंडलदर्शनतरलिततुं
गतरंगं। हरिमेकरसं चिरमभिलषितविलासं।
साददर्श गुरुहर्षवशंवदवदनमनंगविकासं। हा
रममलतरतारमुरसि दधतं परिलंब्य विदूरं। स्फु
टतरफेनकदंबकरंबितमिव यमुनाजलपूरं॥४॥

श्यामल मृदुल कलेवर मंडल मधिगत गौर दुकूले
नीलनलिन मिव पीत पराग पटल भर वलयित मू
ले ३ तरल दृगंचल चलन मनोहर वदनजनित र
तिरागे। स्फुट कमलोदर खेलित खंजन युगमिव
शरदितडागे ४ वदनकमल परिशीलन मिलित
मिहिर समकुंडल शोभे। स्मित रुचि कुसुम समु

लसिताधर पल्लव कृत रति लोभम् ५ शशिकिर
ण छुरितोदर जलधर सुंदर सकुसुम केश तिमिरो
दित विधु मंडल निर्मल मलयज तिलक निवेशे ६
विपुल पुलक भर दंतुरिते रति केलि कलाभिरधीरे
मणि गण किरण समूह समुज्वल भूषण सुभग
शरीरे ७ श्रीजयदेव भणित विभव द्विगुणी कृत

गी॰ गो॰
टी॰

भूषणभारं । प्रणमत हृदि विनिधाय हरिं सुचिरं सु
कृतोदयसारं द ॥ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ गतवति स
खीवृंदे मंदत्रपाभर निर्भर स्मर पर वशाकूतस्फी त
स्मितस्नापिताधराम् । सरस मनसं दृष्ट्वा दृष्ट्वा मुहु
र्नव पलव प्रसर शयने निक्षिप्ताक्षी मुवाच हरिः
प्रियां ॥ किशलय शयने तले कुरु कामिनि चरण

कमल विनिवेशं। तव पद पल्लव वैरि परा भव मिद
मनुभवतु सुवेशं १ क्षण मधुना नारायण मनुग
त मनुसर राधिके। ध्रु-। करकमलेन करोमि चरण
महमागमितासि विदूरं। क्षण मुपकुरु शयनो
परि मामिव नूपुर मनुगति शूरं २ वदन सुधानिधि
गलित ममृत मिव रचय वचन मनुकूलं। विरह

मिवापन यामि पयोधरतोयक स्तवसितकुल ॥३॥
प्रियपरिरंभणरभसवलितमिव पुलकितमतिदु
रवापम् । मधुरसिउव कलशे विनिवेशय शोषय
मनसिज तापम् ४ अधरसुधारसमुपनय भामि
नि जीवय मृतमिव दासम् । त्वयि विनिहितमनसं
विरहानलदग्धवपुषमविलासम् ५ शशिमुखि

मुखरय मणि रशना गुण मनुगुण कंठ निनादम्
श्रुति युगले पिकरुत मम शमय चिरादवसादे ६
मामति विफल रुषा विफली कृत मव लोकितम
धुनेदं । मीलति लज्जित मिव नयने नव विरमवि
सृज रति खेदम् ७ श्रीजयदेवकवेरिदमनुपदनि
गदित मधुरिपु मोदम् । जनयतु रसिकजनेषुम

ग·म·
गो·

नोरम रति रस भाव विनोदम् ।८।। अष्टपदी ।। श्लो
क ।। प्रत्यूहः पुलकांकुरेण निविडाश्लेषे निमेषेण
च क्रीडाकूत विलोकिते धरसुधा पानेकथानर्म
भिः आनंदाधिगमेन मन्मथ कला युद्धेपि यस्मिन्न
भूद् उद्भूतः स तयोर्बभूव सुरता रंभः प्रियं भावुकः
२६ मीलद्दृष्टि मिलत्कपोल पुलकं सीत्कार धारावश

शादव्यक्ता ञ्जलकेलि काञ्चिक सहेता ञ्जयो नाय
रे स्वसेन्कामपयोधरे भशपरिष्वगान्ञ्जरंगोदशो
ह्रर्षोत्कर्ष विमक्त निःसहतनोर्धन्यो धयत्याननं ७८
दोर्भ्यां संयमितः पयोधरभरेणापीडितः पाणिजै
राविद्धोदशनैःक्षतधरपुटःश्रोणी नटे नाहतः ह
स्तेनानमितः कचेधरमधुस्यन्देन संमोहितः कां

रा° म°
गी

नः कामपि त्वम्भि मापनदग्धो कामस्य वामा गतिः ४८

वामांके रतिकेलिसंकररणारंभे नया साहस प्राये

कांतजयाय किंचिदुपरि प्रारंभि यत्नंभ्रमान्निस्पंदा ज।

घनस्थली शिथिलिते दोर्वल्लि रुत्कंपिते वक्षो मी

लितं मदि पौरुषरसः स्त्रीणां कुतः सिध्यति ४९। न

स्याः पाटलपाणिजांकितमुरो निद्राकषाये दृशौ

५३ म ५८

घनिर्हृतो धरशोणिमा विगलिता स्रस्तस्रजो मृष्टेजाः

कोवीदा मदरस्खलत्याबलमिति ध्यानत्रिवोनैरदृशोरेभिः

कामशौरैस्तदद्भुतमभूत्तत्तत्क्षिनः कोलितम् ८ अथ

कांतेरति श्रांत मपि मंडने वोत्तयानिज गाद तिराधा

या राधा स्वाधीन भर्तृका ८९ इति मनसा निगदंते

स्वयंतोते सानितोन गिविंत्रांगी ह्या जगाद सादर कि

रा·म·
गी·

दमानंदेन गोविंदे द२ अष्टपदी॥ कुरु यदुनंदन चंद
न शिशिर तरेण करेण पयोधरे। मृग मद पत्र कम
त्र मनो भव मंगल कलश सहोदरे १ निजगाद साय
दुनंदने क्रीडति हृदया नंदने। दथर त्रुंबन लंबितक
जल मुज्वलय प्रियलोचने श्रुति कुल गंजन मंजनके
रति नायक मोचने २ नयन कुरंग तरंग विकासिनि

वासकरे श्रुति मंडले । मनसिज पाश विलास करे शु
भवेष निवेशाय कुंडले ३ भ्रमर चयं रचयंत मपरि रुचि
रं सुचिरं मम सन्मुखें जित कमले विमले परिकल्प
य नर्म जनक मलकं मुखे ४ मृगामद रसललिते
ललिते कुरु तिलक मलिक रजनीकरे । विहित
कलंक कलं कमलानन विश्रमित श्रम शीकरे ५

मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानद मानस जधज वामरे ॥
रति गलिते ललिते कुसुमा निशि खंडि शिखंड कडा
मरे ८ सर सघने जघने मम शंवर दारण कंदरे । मणि
रशना वसना भरणानि शुभाशय वासय सुंदरे ॥९॥
श्रीजयदेव वचसिजयदे सदये हृदयं कुरु मंडने ॥
हरिचरण स्मरणा म्रत कृत कलि कलुषज्वर खंडने ८

श्लोक ॥ रचय कुचयोः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोलयो

र्घटय जघने कांचीमंच स्रजा कवरीभरं ॥ कलय व

लयश्रेणीं पाणौ पदे कुरु नूपुरा विति निगदितः प्री

तः पीतांबरोपि तथाकरोत् ॥ २४ प्रातर्नील निचोलम

च्युत मुरः संवीत पीतांशुकं राधायाश्चकितं विलो

क्य हसति स्वैरं सखीमंडले ॥ व्रीडाचंचलमंचलं न

गा·म·
गी·

यनयो राधायवा यानने स्वैरे स्मेर मुखांबुजोस्तु जग
दानंदाय नंदात्मजः ८५ पर्यंकी कृत नाग नायक
फणा श्रेणी मणीनां गणे संक्रांत प्रति बिंब संवल
नया बिभ्रद्विभु प्रक्रियाम् । पादांभोरुह धारि वारि
धि सुता मक्ष्णां दिदृक्षुः शतैः । कायव्यूह मिवाचरे
नुपचितीभूतो हरिः पातु वः ८६ त्रियंककंठ विलो

लमौलितरलोत्तंसस्य वंशोच्चर । गीतिस्थानकृता व

धान ललना लक्षैर्न संलक्षिताः प्रेम्णा कन्दलिताः

स्मेरमय मधुरे राधा मुखेन्दौ सुधा । सारे वो मधुसू

दनस्य ददतु क्षेमं कटाक्षोर्मयः ।५९॥ अष्टपदी ॥

संचरदधरसुधामधुरध्वनि मुखरित मोहन वंशं ।

चलितदृगंचलचंचलमौलि कपोल विलोलवतंसं १

ग·म·
गी·

रासे हरि मिह विहित विलासे । स्मरति मनो मम कृ
त परिहासं चंद्रक चारु मयूर शिखंडक मंडल व
लयित केशं । प्रचुर पुरंदर धनुरनु रंजित मेदुरमु
दिर सुवेशं २ गोप कदंब नितंब वती मुख चुंबन
लंभित लोभं । बंधु जीव मधुराधर पल्लव मुल्लसि
त स्मित शोभं ३ विपुल पुलक भुजपल्लव वलयि

न वंलव श्रवति मनसे। करचरणोरसि मणिग
ण भूषण किरण विभिन्न तमिस्रे ४ जलद पट
ल वल दिंदु विनिंदक चंदन तिलक ललाटे। पीन प
योधर परिसर मर्दन निर्दय हृदय कपाटे ५ मणि
मय मकर मनोहर कुंडल मंडित गंड मुदारे। पीत
वसन मनुगत मुनि मनुज सुरासुर वर परिवारे ६

ग·म·
गी·

विशद कदंबतले मिलितं कलि कलुष भयं शम
यंतं । मामपि किमपि तरंग दनंग दृशा मनसा
रमयंतं ७ श्रीजयदेव भणित मति सुंदर मोहन
मधुरिपु रूपं । हरिचरण स्मरणं प्रति संप्रति पु
ण्यवता मनुरूपं ।८॥ श्लोक ॥ हस्त स्रस्त
विलास वंशमनृजु भ्रूवल्लि मद्बल्लवी वृंदोत्सा

रिटंगेन बीलिने मतिस्वेदाद्री गंडस्थले । मामही

द्प विलजिन क्षिन हथा मृगयानंदं कानने । गो

विंदं व्रज सुंदरी गण हृतं पश्यामि हृष्यामि च ८८

श्रेन मौहन मौलि हृणिन वल न्मंदार विसेसनःस्र

व्याकर्षणा दृष्टि हर्षणा महा मंत्रं जरंगीहशो । दृ

प्याहानव हृय मान दिविषद्वीरङ्ग:खपदो ॥

ग·म·
गी·

स्वेमः केसरिपो व्यपो हृय नवो श्रेयांसि वैशीरवः

८९ यद्गांधर्व कलासु कौशलमनु ध्यानं च यद्वैष्णवं

यच्छृंगार विवेक तत्व मपि यत्काव्येषु लीलायितं

तत्सर्वं जयदेव पण्डित कवेः कृष्णैकतानात्मनः सा

नंदाः परिशोधयंतु सुधियः श्रीगीतगोविंदतः

९· साध्वी माध्वीक चिंता न भवति भवतः शर्करे क

केशासि द्राक्षे द्रक्ष्यंति केत्वा ममृतं मृत मसि क्षीरनी

रंरसस्ते । माकंदं क्रंद कांताधर धरणितलं गच्छ

यच्छंति यावद्भावं शृंगार सारस्वत मय जयदेवस्य

विष्वग्वचांसि ॥ श्री भोजदेव प्रभवस्य रामादेवी

सुत श्री जयदेवस्य । पराशरादि प्रियवर्गकंठे

श्री गीतगोविंद कवित्वमस्तु । जयश्री विमले

रा-म
गी

मिहित इव मंदार कुसुमैः स्वयं सिंदूरेण द्विपरण
मुद्रा मुद्रित इव। भुजापीड क्रीडा हत कुवलया
पीडकरिणः। प्रकीर्णासृग्बिंदुर्जयति भुजदं
डो मुरजितः ५३ ॥ इति राग मधु गीत गोविं
दपरिच्छेदः समापनम् ॥ शुभंभूयात् ॥

कशासि द्राक्षे द्रक्ष्यंति केत्वा मम्रतं म्रत मसि क्षीर

नीरं रसस्ते । माकंदं क्रंद कांता धर धरणितले ग

च्छ यच्छंति यावद्भावं शृंगार सारस्वत मय जय दे

वस्य विष्वग्वचांसि ॥१ श्री भोज देव प्रभवस्य रा

मा देवी सुत श्री जय देवस्य । परा शरादि प्रियव

र्गी कंठे श्री गीत गोविंद कवित्वमस्तु । जय श्री

रा॰ दे॰
गी॰

विम्बसैसिद्दित इव मंदार कुसुमैः स्वयं सिंदूरेण दि
पिरण मुदा मुद्रित इव । भुजापीड क्रीडाहत कुव
लयापीडकरिणः । प्रकीर्णासृग्विंदुर्जयति भुज
दंडो मुरजितः ९३ ॥ इति राग देव शास्त्रस्य गी
त गोविंद परिच्छेदः समाप्तम् ॥